जनजातीय समाज की समस्याएं, सफलताएं एवं चुनौतियां

डॉ. (श्रीमती) राखी वंशकार
सहायक प्राध्यापक, राजनीति शास्त्र विभाग
शासकीय स्नातक महाविद्यालय भुआ बिछिया, मंडला, मध्य प्रदेश

सारांश

जनसंख्या की दृष्टि से वेबसाइट वर्ल्डोमीटर के अनुसार 2021 में भारत की जनसंख्या लगभग 139 करोड़ हो चुकी है, जिसमें 8.14% आबादी आदिवासी समुदाय की है, जो 15% भाग पर निवास करते हैं। यह समुदाय आज भी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं व्यक्तिगत क्षेत्र में पिछड़ा हुआ है। यह जनजातियां विभिन्न प्रकार की समस्याओं से आज भी जूझ रही हैं। समाज और विकास की मुख्य धारा से यह वर्ग आज भी बहुत दूर है। सरकार द्वारा एवं गैर सरकारी संगठनों द्वारा विभिन्न प्रयास किये जा रहे हैं उनके विकास के लिए, किंतु इन प्रयासों से उतनी सफलता प्राप्त नहीं हुई जितने की आशा की गई थी। जनजाति समुदाय के बहुत कम लोगों को यह अवसर प्राप्त हो पाया है कि वह समाज और विकास की मुख्य धारा में शामिल हो सके। जिनको अवसर मिला उन्होंने इसका बखूबी इस्तेमाल किया। किंतु एक बहुत बड़ा भाग आज भी समस्या ग्रस्त है और इन्हीं समस्याओं के कारण उनको भविष्य में कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। उनके उत्थान और विकास के लिए न केवल सरकार अपितु प्रत्येक व्यक्ति का सहयोग नितांत आवश्यक है ।

प्रस्तावना - मानव समाज हजारों और लाखों वर्षों की विकास प्रक्रिया से गुजरता हुआ वर्तमान अवस्था तक पहुंचा है। प्रारंभिक अवस्था में मानव जंगलों और पहाड़ों में निवास करता था तथा फल-फूल और शिकार की सहायता से अपने जीवन का निर्वहन करता था। जैसे ही मानव समाज ने कृषि का आविष्कार किया वह एक स्थान पर स्थाई तौर से निवास करने लगा। संपूर्ण मानव समाज का विकास एक ही साथ नहीं हुआ। कुछ समाज विकास की परंपरा में आगे बढ़ गए तो दूसरे समाज का पीछे रह गए। अनेक मानव समाज आज भी आखेट अवस्था में ही निवास कर रहे हैं। धीरे-धीरे इनकी संख्या में निरंतर वृद्धि होती चली गई। **इंपीरियल गजेटियर** में जनजातियों को परिभाषित करते हुए लिखा गया है कि **"एक आदिम जाति परिवारों का वह समूह जिसका एक सामान्य नाम होता है, जिसके सदस्य एक सामान्य भाषा बोलते हैं, एक सामान्य क्षेत्र में रहते हैं या स्वयं को उसे क्षेत्र से संबंधित मानते हैं, सामान्यतः यह समूह अंतर विभागीय होते हैं।"** इन्हीं को जनजाति, आदिवासी, आदिम जाति या बनवासी कहा जाता है।

जनजातीय वर्ग की समस्याएं - वैसे तो जनजाति समाज की बहुत सारी समस्याएं हैं, किंतु कुछ महत्वपूर्ण समस्याएं निम्न प्रकार की हैं -

1. शिक्षा की पहुंच से दूर
2. आधुनिक समाज के साथ सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई
3. दुर्गम निवास स्थान के कारण उत्पन्न समस्याएं
4. मूलभूत आवश्यकता संबंधी समस्याएं

5. सामाजिक क्षेत्र में उत्पन्न विभिन्न समस्याएं
6. नशावृत्ति की समस्या
7. आर्थिक विषमताएं
8. धार्मिक समस्याएं
9. स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं
10. सभ्य समाज के संपर्क से संस्कृति को खतरा
11. विस्थापन की समस्या
12. अस्पृश्यता की समस्या
13. ऋणग्रस्तता की समस्या
14. प्राकृतिक आपदाएं

जनजाति वर्ग की सफलताएं - इतनी समस्याओं के बावजूद भी जनजातीय समाज के कुछ मेधावी एवं करिश्माई व्यक्तित्व के धनी लोगों ने विभिन्न क्षेत्रों में आदर्श प्रस्तुत किया है। किंतु इनकी संख्या बहुत कम है, फिर भी उस अधिकांश के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं जो अभी भी पिछड़े हुए हैं। जनजाति वर्ग की सफलताएं इस प्रकार हैं -

1. सामाजिक क्षेत्र में सक्रियता - जनजाति समाज आज भी सामाजिक क्षेत्र में विकास की ओर बढ़ रहा है। सरकार द्वारा किए गए प्रयासों का परिणाम है कि कम मात्रा में ही सही किंतु कुछ जनजातीय लोगों में शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ता जा रहा है। कई जनजातीय लोगों ने सामाजिक परिवर्तन की दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान भी दिया है। कई तो समाज सुधार के कार्यों में भी आगे आए हैं। पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में अद्वितीय भूमिका निभाई है। नशामुक्ति कार्यक्रम में भी जनजाति समाज के युवा वर्ग सामने आ रहे हैं। समाज सुधार के क्षेत्र में महात्मा ज्योतिबा राव फुले, सावित्रीबाई फुले, टंट्या भील, बिरसा मुंडा जैसे महान नायकों ने कीर्तिमान स्थापित किया है। वैसे तो जनजातीय समाज पिछड़े हुए समाज की श्रेणी में आता है, किंतु कुछ महान विभूतियों ने न केवल अपने विकास के लिए अपितु संपूर्ण जनजातीय समाज के विकास के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए हैं।

2. आर्थिक क्षेत्र में सक्रियता - आज सरकार द्वारा विभिन्न आर्थिक योजनाएं जनजातियों के उत्थान हेतु चलाई जा रही हैं, जिसके कारण जनजातीय समाज की आर्थिक स्थिति में कुछ हद तक सुधार देखा जा सकता है। कुछ महत्वपूर्ण प्रयास हैं, जैसे बीपीएल कार्ड, आर्थिक सहायता ऋण की उपलब्धता, आजीविका हेतु प्रशिक्षण प्रदान करना, स्वरोजगार हेतु प्रोत्साहन राशि प्रदान करना, नौकरी में विशेष आरक्षण की व्यवस्था करना तथा आर्थिक विकास हेतु नित नवीन प्रयास करना। इन्हीं प्रयासों के परिणाम स्वरूप आज कुछ युवा आर्थिक विकास में शामिल हो चुके हैं, किंतु अधिकांश जनजातीय समूह इन योजनाओं का लाभ नहीं उठा पा रहे हैं।

3. राजनीतिक सफलता - जनजाति समाज की राजनीतिक सफलता का इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है कि देश के सर्वोच्च पद (राष्ट्रपति) पर एक जनजाति समाज की महिला पदस्थ है। आज राजनीतिक क्षेत्र में जनजातियों का एक छोटा सा हिस्सा अपनी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित कर रहा है। जो शिक्षित हैं और सभ्य समाज एवं विकास की धारा के साथ आत्मसात होना चाहता है उन्होंने इस क्षेत्र में सफलताएं भी प्राप्त की है। विभिन्न राजनीतिक क्रियाकलापों में अपनी योग्यता प्रदर्शित कर रहे हैं। चाहे उम्मीदवार हो या चाहे मतदाता

हो, प्रतिनिधित्व हो या इन सभी रूपों में जनजाति वर्ग के युवा आगे आ रहे हैं और अपने समाज के उत्थान के लिए भी प्रयासरत है। किंतु इस अवसर का लाभ कुछ लोगों के द्वारा ही उठाया जा रहा है और इन्हें प्रोत्साहित किया जा रहा है ताकि उनसे प्रेरणा लेकर अन्य लोग भी आगे आएं।

4. सांस्कृतिक क्षेत्र में सफलता- हम भले ही जनजातीय समाज को पिछड़ा और विकसित कहते हैं , लेकिन सत्य तो यह है कि आज भी वे अपनी संस्कृति एवं सभ्यता को पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, समाजीकरण से बचा कर रखे हुए हैं। जहां एक और हम सभ्य समाज का नारा लगा रहे हैं और अपनी सभ्यता और संस्कृति को, रीति रिवाज को, खान-पान, रहन-सहन, बोली भाषा, सामाजिक मूल्य आदि के स्थान पर आधुनिकता एवं पश्चिमी सभ्यता की नकल कर रहे हैं। ऐसे में जनजातीय समाज में आज भी अपने संस्कार, अपनी संस्कृति एवं सभ्यता को सुरक्षित रखा गया है। उनकी संस्कृति को संरक्षित रखने के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन शासन के द्वारा स्वयं किया जाता है। जनजातीय समाज विकास चाहता है किंतु अपनी संस्कृति और सभ्यता को ताक पर रखकर नहीं। अपना विकास अपनी संस्कृति को दांव पर लगाकर नहीं करना चाहते।

5. व्यक्तिगत सफलता - जनजाति समाज में कुछ ऐसे युवा वर्ग हैं, जिन्होंने व्यक्तिगत क्षेत्र में अपना विकास किया है। चाहे वह समाज सुधारक के रूप में रामास्वामी नायकर, बिरसा मुंडा हो , चाहे राजनीतिज्ञ के रूप में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, अनुसुइया उईके (राज्यपाल छत्तीसगढ़) झारखंड के मुख्यमंत्री श्री हेमंत सोरेन, केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा एवं सांसद विधायक आदि हो। इन्होंने जनजातीय समाज एवं संपूर्ण मानव जाति के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया है कि हर व्यक्ति सफलता प्राप्त कर सकता है।

जनजातीय वर्ग की चुनौतियां- देश की आजादी के संघर्ष से लेकर आज तक आदिवासियों को मुख्य धारा में लाने के लिए पृथक्करण, विलीनीकरण और एकीकरण जैसी प्रक्रियाओं से गुजरने के बाद भी आज आदिवासी वहीं हैं जहां वे पहले थे। सिर्फ कुछ बातें नहीं हुई हैं जैसे कि वह कौन हैं, वह वास्तविकता है या मानसिकता। वह दलित हैं या नहीं, अगर वह दलित नहीं हैं तो उनके सामाजिक उपचार की रूपरेखा क्या हो,आदि। वास्तविकता यह है कि आदिवासी इंसान आक्रामक संस्कृतियों के जय पराजय के दौर से निकलकर कल्याणकारी राज्य के उदय के पश्चात व्यक्ति, स्वतंत्रता और जनतंत्र जैसे बड़े नाम के रक्षार्थ जनजातीय संरक्षण ऐसे हर समाज की नियति बन गया है। कोई भी समाज जहां जनजातियां हैं वहां की मुख्य धारा के लोग ना तो उनकी उपेक्षा कर सकते हैं और ना ही उनकी अपेक्षाओं पर खरे उतर पा रहे हैं । इसलिए जनजाति वास्तविकता से एक मानसिकता में तब्दील होती जा रही है। ऐसे अनेक मूर्त अमूर्त पैमानों पर भारतीय जनजातियों के आंकलन के पश्चात उनके भविष्य की उद्घोषणा की जा सकती है।

1. सामाजिक चुनौती- यदि जनजाति समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों एवं कुरीतियों को दूर नहीं किया गया तो आने वाले समय में उनका सामाजिक जीवन और अधिक चुनौती पूर्ण हो सकता है। यथा- बाल विवाह, कन्या मूल्य, नशावृत्ति आदि। ये सभी न केवल उनके वर्तमान का नाश कर रहे हैं अपितु यह दीमक की तरह इनका भविष्य भी खोखला कर रहे हैं। यह सभी ऐसी कुप्रथाएं हैं जो प्रत्येक समाज के लिए हानिकारक हैं एवं निकट भविष्य में इससे कई अन्य प्रकार की समस्याएं भी जन्म ले सकती हैं।

2. विकास की मुख्यधारा से जुड़ाव - आदिकाल से ही एक वर्ग जो कि समाज और विकास की मुख्य धारा से पृथक जंगलों में जीवन यापन कर रहा है, जिसे हम जनजाति, वनवासी, आदिवासी समाज कहते हैं। आज भी सरकार के द्वारा इतने प्रयास किए जाने के बावजूद यह वर्ग समाज और विकास की मुख्य धारा से तारतम्य स्थापित नहीं कर पा रहा है। यदि यह वर्ग इसी तरह एकाकी जीवन व्यतीत करते रहे तो निकट भविष्य में यह वर्ग विकास की मुख्य धारा से बिल्कुल अलग हो जाएंगे और इन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। क्योंकि वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है। प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा चल रही है, विकसित होने के लिए और यदि यह अपनी उदासीनता के कारण इस प्रतिस्पर्धा में शामिल नहीं होते हैं तो इनका भविष्य अंधकार में डूब जाएगा।

3. तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी पिछड़ापन - वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है। जहां तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकसित वर्ग ही भविष्य में विकसित की श्रेणी में शामिल हो पाएंगे, जबकि आज जनजातीय समाज इन दोनों ही क्षेत्र में अपनी सहभागिता सुनिश्चित नहीं कर पा रहा है। बहुत ही कम लोग हैं जो कि इन क्षेत्रों में आगे आ रहे हैं। अधिकांश जनजातीय सदस्य अभी भी इन क्षेत्रों से दूर हैं। इसका एक महत्वपूर्ण कारण है शिक्षा एवं अज्ञानता। जनजातीय समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा मोबाइल, इंटरनेट, कंप्यूटर आदि तकनीक से कोसों दूर है, और यदि जनजातीय वर्ग ने इन क्षेत्रों से इसी प्रकार दूरी बनाए रखी तो आने वाले समय में इन्हें बहुत सी चुनौतियां का सामना करना पड़ सकता है।

4. आधुनिकीकरण एवं पश्चिमीकरण- वर्तमान समय में आधुनिकीकरण एवं पश्चिमीकरण के चलते सामाजिक परिवर्तन हो रहे हैं। जहां एक समाज अथवा राष्ट्र दूसरे समाज एवं राष्ट्र के रहन-सहन, खान पान एवं रीति रिवाजों, बोली भाषा आदि को आत्मसात कर रहा है वहीं दूसरी तरफ जनजातीय समाज आज भी जंगलों में निवास कर रहा है, जिसमें वह अपने दायरे में किसी आधुनिकता एवं संस्कृति को मान्यता नहीं देना चाहते। इनका हस्तक्षेप स्वीकार नहीं करना चाहते। जिसके कारण उनको भविष्य में विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

5. पर्यावरणीय संकट - जैसा कि हम सभी जानते हैं कि जनजातियां सुदूर जंगलों एवं वनों में निवास करती हैं, जहां आम आदमी नहीं पहुंच सकता और ना ही जनजातियां किसी और को पहुंचने देना चाहती हैं। इसके अतिरिक्त पर्यावरण संकट भी गहराता जा रहा है। जहां वनों का विनाश, अम्लीय वर्षा, भूमिगत जल में कमी, चारागाह की कमी, आखेट की समस्या, सूखा, आकाल, बाढ़ आदि प्राकृतिक विपदा आती ही रहती हैं, ऐसे मे गांवों एवं शहरों से दूर यह जनजातियां किस प्रकार इन समस्याओं का सामना करेंगी, यह चिंता का विषय है। पर्यावरण के संरक्षक जल-जंगल-जमीन के संरक्षक तो केवल इस क्षेत्र विशेष तक पर्यावरण को सुरक्षित रख सकते हैं, लेकिन बाह्य कारकों की वजह से पर्यावरण को जो नुकसान हो रहा है उससे जनजाति क्षेत्र अछूता नहीं है। ऐसे में आने वाले समय में जनजाति वर्ग को पर्यावरण संकट से संबंधित कई चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

6. आर्थिक विषमताएं- वर्तमान समय में वैसे ही जनजातीय समाज आर्थिक विषमता से घिरा हुआ है और ना ही वे सरकार द्वारा चलाई जाने वाली योजनाओं का लाभ उठा पा रहे हैं। ऐसे में उनका भविष्य भी गरीबी, बेरोजगारी एवं बदहाली में नजर आ रहा है। जनजातीय समाज सरकार द्वारा दी जाने वाली आर्थिक सहायता का लाभ भी पूरी तरह से नहीं उठा पा रहे हैं। सरकार द्वारा दी जाने वाली आर्थिक सुविधाओं में से एक है ऋण उपलब्ध कराना, लेकिन ऋण लेने के बाद हितग्राही उसका सही प्रयोग नहीं कर पाते हैं और पुनः उसी स्थिति में आ जाते हैं यदि जनजाति वर्ग ऐसा व्यवहार अपनाते रहे तो भविष्य में उन्हें कठिन आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ सकता है।

निष्कर्ष - जनजातियों को आर्थिक एवं सामाजिक विकास की गति में लाने के लिए प्रशासन तथा समाज सेवी संस्थाओं की ओर से बहुत सी कल्याणकारी योजनाएं लागू की गई है। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह सभी योजनाएं जनजातियों के बहुमुखी और चहुंमुखी विकास के लिए ही अपनाई गई हैं तथा उन पर सरकार की ओर से बहुत अधिक व्यय भी किया जाता रहा है, ताकि देश के विकास में यह जनजातियां भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें। इन प्रयासों से जनजातियों के मार्ग की बाधाएं दूर हुई हैं और उनके अंधकार भरे जीवन में नया प्रकाश आया है। नए विचारों ने उनके जीवन में प्रवेश किया है जिससे उनकी स्थिति में कुछ हद तक बदलाव भी देखा गया है। फिर भी समग्र अध्ययन करने में यह ज्ञात हुआ है कि उनके जीवन शैली में कोई स्पष्ट परिवर्तन नहीं हुआ है। यहां यह कहना अनुचित नहीं होगा की कल्याणकारी योजनाओं के सार्थक परिणाम सामने आए हैं पर कार्यक्रम की बड़ी मात्रा में असफल होने का भय भी है। प्रभावकारी रहने के बाद भी कुछ सीमा तक दूर दराज क्षेत्र में रहने वाली जनजातियों पर तो इन योजनाओं का मानो प्रभाव ही नहीं पड़ा। फिर भी चहुंमुखी विकास के लिए प्रयास जारी है, परंतु आवश्यकता इस बात की है कि उनके लिए विकास कार्य शुरू करने से पहले उन्हें यह विश्वास होना चाहिए कि अमुक कार्यक्रम हमारा है और हमारे कल्याण के लिए है। कल्याणकारी कार्यक्रमों से जनजातियों का विकास होगा। इस आशा के साथ परिवर्तन के इस दौर में यह भी ध्यान देना आवश्यक है जिससे उनका सामान्य जीवन भी अस्त-व्यस्त ना हो।

संदर्भ ग्रंथ : -

1. डॉ. श्रीनाथ शर्मा **"जनजाति समाजशास्त्र"** मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी ।
2. डॉ. मनोज कुमार सिंह **"भारत में सामाजिक परिवर्तन"** आदित्य पब्लिशर्स ।
3. डॉ. जी.एस. बघेल **"भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक समस्याएं"** पुष्पराज प्रकाशन ।
4. डॉ. कमलेश महाजन एवं धर्मवीर महाजन **"जनजातीय समाज का समाचार"** विवेक प्रकाशन।
5. डॉ. डी.एस. बघेल **"जनजाति समाज"** कैलाश पुस्तक सदन भोपाल ।
6. डॉ. डी.एस. बघेल एवं डॉ. किरण बघेल **"सामाजिक परिवर्तन एवं विकास"** कैलाश पुस्तक सदन।
7.http://www.Deshbandhu.co.in
8.http://www.Drishtiias.com
9.http://www.amarujala.com
10.http://www.hi.vikapedia.in
11. अन्य पत्र-पत्रिकाएं ।